ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No.1, Jan. – March, 2026/30

बिहार में प्राचीन काल में उच्च शिक्षाः नालन्दा विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में

राजेश्वर कुमार **एवं** अभिषेक आर्ष

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i1.264

सारांश –

प्राचीन काल से ही बिहार राज्य सभ्यता, संस्कृति, विरासत, वैभव, शासन – प्रणाली एवं शिक्षा के स्तर अग्रणी रहा है तथा इसे पहला अखिल भारतीय साम्राज्य बनने का गौरव प्राप्त रहा है। ऐतिहासिक तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि इस राज्य का प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवशाली होने के साथ – साथ यहाँ शिक्षा का विकास भी वैश्विक स्तर का रहा है। प्राचीन भारत का सबसे प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय में विज्ञान, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, अध्यात्म, दर्शनशास्त्र, तर्क, व्याकरण, लिपि, पुस्तक संस्कृति, अनुवाद, साहित्य, कला वास्तुकला एवं सभ्यता व संस्कृति की ऐसी किरण प्रस्फुटित हुई जिससे न केवल भारत बल्कि समस्त संसार आलोकित हुआ। मौर्यवंश से लेकर गुप्तकाल तक का समय प्राचीन कला, ज्ञान एवं विज्ञान हेतु स्वर्णिम काल माना जाता हैं। मौर्य वंश के पतन के बाद गुप्त काल में भी बिहार में ज्ञान–विज्ञान का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हुआ जिसके कारण इस क्षेत्र का उत्तरोत्तर विकास हुआ।

विषय प्रवेश –

मगध साम्राज्य की दो सबसे प्रमुख और प्रारंभिक राजधानियों – पाँच पहाड़ियों से घिरी पहाड़ी दुर्ग गिरिव्रज (राजगृह/वर्तमान राजगीर) और जल दुर्ग पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) – के बीच अवस्थित नालंदा विश्वविद्यालय दुनिया का पहला अंतर्राष्ट्रीय आवासीय विश्वविद्यालय था जो अपनी व्यवस्था और शिक्षा पद्धति के कारण ''वैश्विक केंद्र'' के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुआ (tourism.bihar.gov.in)। बिहार की ऐतिहासिक पहचान में प्राचीन बिहार की बौद्धिक संपन्नता का प्रतीक नालंदा का स्थान सर्वोपरि है (अहमद, 1990)। यहाँ चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, सुमात्रा, जावा और फारस (ईरान) जैसे देशों से छात्र और विद्वान आते थे।

इसकी स्थापना गुप्तवंशीय शासक कुमारगुप्त के द्वारा की गई। नालन्दा विश्वविद्यालय पांचवीं और छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के संरक्षण के तहत और बाद में कन्नौज के सम्राट हर्ष के अधीन विकसित हुआ। गुप्त युग से विरासत में मिली उदार सांस्कृतिक परंपराओं के परिणामस्वरूप नौवीं शताब्दी तक विकास और समृद्धि की अवधि रही (nalanda.nic.in)। कालांतर में कई पीढ़ियों के गुप्त, पाल और अन्य शासकों द्वारा इसे विकसित किया गया था, जो लंबे समय तक सम्पूर्ण भारत सहित विश्व के अन्य देशों को भी अपने ज्ञान से आलोकित करता रहा। माना जाता है कि यूरोप के कई आधुनिक विश्वविद्यालयों के कैंपस की संरचनाओं की प्रेरणा इसी से ली गई थी। इनमें ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के चौकोर परिसर शामिल हैं (K.Abhay,2025)। यह इस बात का उदाहरण है कि कैसे कई सदियों में विश्वविद्यालय का विचार अपने सही अर्थों में विकसित हुआ और मध्य एशिया, यूरोप और बाकी की दुनिया में फैला ।

- **असिस्टेंट प्रोफेसर – समाजशास्त्र, राजकीय महिला महाविद्यालय, बलिया।**
- **असिस्टेंट प्रोफेसर – इतिहास, कमला देवी बाजोरिया डिग्री कालेज बलिया।**

भारतीय गणित के पितामह कहे जाने वाले आर्यभट्ट, छठीं शताब्दी में नालंदा महाविहार में सबसे प्रमुख गणितज्ञ थे। जिनके द्वारा लिखित पुस्तक 'आर्यभटीय' को वैज्ञानिक तर्क और गणितीय सटीकता का एक उत्कृष्ट संगम माना जाता है। कालांतर में यह शास्त्रीय ग्रंथ भारतीय गणित और खगोलविज्ञान का 'आधार स्तंभ' रहा है । आर्यभट्ट वह पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को एक अंक के रूप में मान्यता दी। इस क्रांतिकारी अवधारणा ने गणनाओं को सरल बनाया और ऐसी अवधारणाओं को जन्म दिया जो आगे चलकर बीजगणित (अल्जेब्रा) और कैल्कुलस के रूप में जानी गईं। बाद में इनके गणितीय कार्य को इनके शिष्य भास्कर प्रथम ने आगे बढ़ाया जो आगे चलकर भारतीय संख्याओं, अल्जेब्रा, कैलकुलस, एलगॉरिद्म और भारतीय खगोलशास्त्र से यूरोप का परिचय कराया।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन काल में बिहार की उच्च शिक्षा में नालन्दा विश्वविद्यालय की भूमिका का अध्ययन करना है ताकि उसके आधार पर आधुनिक उच्च शिक्षा के साथ उसका सह सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

विधि तंत्र–

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि से विश्लेषण करते हुए अध्ययन को पूर्णता प्रदान की गयी है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

नालन्दा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा केन्द्र में हीनयान बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ने आते थे। वर्तमान बिहार राज्य में पटना से 88.5 किमी0 दक्षिण पूर्व और राजगीर से 11.5 किमी0 उत्तर में एक गांव के पास अलेक्जेण्डर कनिंघम द्वारा खोजे गये इस महान विश्वविद्यालय के भग्नावशेष इस प्राचीन विश्वविद्यालय के वैभव का स्वाभाविक ज्ञान करा देते हैं। अनेक अभिलेखों और सातवीं शताब्दी में यहां पढ़ने आये चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण से इस विश्वविद्यालय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। यहां 10000 छात्रों के अध्ययन हेतु छात्रावास, अन्नागार, पुस्तकालय, भोजनालय, ध्यान केन्द्र आदि की व्यवस्थाा थी। इन छात्रों को पढ़ाने हेतु 2000 शिक्षक भी नियुक्त किये गये थे। विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु सर्वप्रथम द्वारपाल के प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक होता था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में यहां अपने जीवन का महत्वपूर्ण वर्ष एक विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था।

1. **अध्ययन–** अध्यापन पद्धति– इस विश्वविद्यालय में आचार्य छात्रों को मौखिक व्याख्यान द्वारा शिक्षा प्रदान करते थे। इसके अलावा पुस्तकों की व्याख्या भी होती थी। विश्वविद्यालय में ध्यान केन्द्र भी बनाये गये थे जहां विद्यार्थी एवं आचार्य एक साथ बैठकर ध्यान किया करते थे। शास्त्रार्थ की भी व्यवस्था थी तथा दिन के हर प्रहर में अध्ययन एवं शंका समाधान की व्यवस्था थी। यहां 'हेतुविद्या' (तर्कशास्त्र) का ज्ञान प्राप्त करना हर छात्र के लिए अनिवार्य था, चाहे वह किसी भी विषय का हो । यहां के शास्त्रार्थ अत्यंत वैज्ञानिक और तार्किक थी (टपकलंइीनींद,2002)। प्राचीन भारत के 'बौद्धिक

साम्राज्य' की राजधानी नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना आज के आधुनिक प्रीमियम संस्थानों से भी कठिन था (।सजमांत, 1957)।

2. **पुस्तकालय–** नालन्दा विश्वविद्यालय में हजारों विद्यार्थियों एवं आचार्यों के अध्ययन के लिए नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था, जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का संकलन था। पुस्तकालय में सभी विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें थी। यह रत्नरंजक, रत्नोदधि एवं रत्न सागर नामक तीन विशाल भवनों में स्थित था। रत्नोदधि पुस्तकालय में अनेक अप्राप्त हस्त लिखित पुस्तकें संग्रहीत थी।इनमें से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपि चीनी यात्री अपने साथ ले गये थे।

3. **प्रबन्धन** – समस्त विश्वविद्यालय का प्रबन्धन प्रमुख आचार्य करते थे। विश्वविद्यालय को दान में मिले 200 गाँवो से प्राप्त उपज और आय की देखरेख समिति करती थी। इसी से छात्रों के भोजन, कपड़े आदि का प्रबन्ध होता था। यहां का प्रबंधन व्यवस्था 'लोकतांत्रिक' था, जहाँ सभी निर्णय सामूहिक चर्चा से लिए जाते थे (प्रसाद, 1951)। एक संगठित विश्वविद्यालय संरचना के मामले में नालंदा का कोई सानी नहीं था।

4. **आचार्य–** इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे। नालन्दा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। सातवीं सदी में ह्वेनसांग के समय शीलभद्र इस विश्वविद्यालय के प्रमुख थे जो एक महान आचार्य, शिक्षक और विद्वान थे।

5. **छात्रावास** – यहां छात्रों के रहने के लिए 300 कक्ष बने थे । एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरें में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबन्धन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था।

6. **छात्र संघ** – यहां छात्रों का अपना संघ था। वे स्वयं इसकी व्यवस्था तथा चुनाव करते थे। यह संघ छात्रों से सम्बन्धित विविध मामलों जैसे शिक्षा, चिकित्सा, छात्रावास आदि का प्रबन्ध करता था।

7. **अर्थव्यवस्था –** छात्रों को किसी प्रकार का अर्थ का व्यय नहीं करना पड़ता था। उनके लिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र, औषधि और उपचार आदि सभी निःशुल्क था।

8. **विदेशी यात्री** – प्रसिद्ध चीनी यात्री एवं विद्वान ह्वेनसांग और इत्सिंग ने यहां सांस्कृतिक व दर्शन सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने अपने यात्रा वृतान्त एवं संस्मरणों में नालन्दा के विषय में काफी कुछ लिखा है। अनेकों विदेशी छात्र भी यहां अपनी शंकाओं का समाधान करते आते थे। इत्सिंग ने लिखा है कि विश्वविद्यालय के विख्यात विद्वानों के नाम मुख्य द्वार पर श्वेत अक्षरों में लिखे जाते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की लोकप्रियता एवं वैभव का आलम यह था कि छह साल तक लगातार चलने और चाँगआन से नालंदा के बीच साढ़े चार हजार किलोमीटर से भी ज्यादा की दूरी तय करने के बाद ह्वेनसांग नालंदा विश्वविद्यालय पहुंचा था।

9. **प्राचीन अवशेष** – विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं। खुदाई से मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। यह परिसर दक्षिण से उत्तर दिशा में बना हुआ है। इस परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार थी । आज भी यहां दो मंजिला इमारत शेष

है। यह इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप बनी हुई थी। इस विहार का छोटा सा प्रार्थनालय अभी भी सुरक्षित बचा हुआ है। इस प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा बनी हुई है।

10. **अवसान** – तेरहवीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज एवं तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृतान्तों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्की के आक्रमण से बड़ी क्षति हुई। इस पर पहला आघात हूण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। 12वीं सदी के अंतिम दशक में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जला कर नष्ट कर दिया।

11. **पुर्नजीवन प्रयास** – नालन्दा शिक्षा और ज्ञान– विज्ञान का प्राचीनतम् केन्द्र रहा है तथा कभी महान वैश्विक विश्वविद्यालय के रुप में ख्याति प्राप्त रहा है। इस विख्यात नालन्दा के पुरावशेषों को यूनेस्को विश्व धरोहर में सम्मिलित किया गया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के द्वारा नालन्दा पुरावशेष, प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल को पुरावशेष अधिनियम 1958 के तहत संरक्षित स्थल घोषित किया गया है।

12. **विचारों और धर्म का निर्यात** – भारत ने दुनिया को तलवार के बल पर नहीं, बल्कि विचारों के माध्यम से जीता जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान अभूतपूर्व रहा है। आधुनिक दुनिया जिन अंकों (0–9), दशमलव प्रणाली और एल्गोरिद्म का उपयोग करती है, उनका मूल प्राचीन भारत में है। ये विचार भारत से अरब जगत पहुँचे और फिर वहाँ से यूरोप जाकर 'पुनर्जागरण' का आधार बने (Dalrymple W., 2024)।

नालंदा विश्वविद्यालय को भारत के 'सॉफ्ट पावर' के प्राचीन उदाहरण के रूप में भी देखा जा सकता है, जिसने बिना किसी सैन्य अभियान के पूरे एशिया को भारतीय संस्कृति से प्रभावित किया (डववामतरप, 1974)। नालन्दा विश्वविद्यालय के नाम पर एक नये विष्वविद्यालय की स्थापना की गयी है, साथ ही खण्डहर के पुनरूद्धार के प्रयास में सिंगापुर, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देश आगे आ रहें हैं।

दुनिया भर में नालंदा से प्रेरित संस्थान (Abhay. 2025) – श्रीलंका का नालंदा गेडिगे, तिब्बत का फेनपो नालेंद्र, सिक्किम में कर्म श्री नालंदा संस्थान, फरांस के लावूर में नालंदा मठ, ब्राजील में नालंदा बौद्धिस्ट सेंटर ब्राजील में नालंदाराम रिट्रीट, कनाडा में नालंदा कॉलेज ऑफ बौद्धिस्ट स्टडीज, थाईलैंड में इंटरनेशनल बौद्धिस्ट कॉलेज, मलेशिया में नालंदा इंस्टीट्यूट, अमेरिका में नालंदा इंस्टीट्यूट फॉर कंटेम्पलेटिव साइंस।

उपसंहार–

प्राचीन बिहार के गौरवशाली इतिहास में नालंदा विश्वविद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि ज्ञान का वैश्विक पुंज था जो कि प्राचीन भारतीय मेधा और सांस्कृतिक उदारता का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक था। इसने शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण के माध्यम से भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर पूरे एशिया को एक बौद्धिक सूत्र में पिरोया। सामाजिक और शैक्षणिक –दृष्टि से नालंदा का महत्व इस बात में निहित है कि इसने 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को चरितार्थ किया। बिना किसी शुल्क के श्रेष्ठतम शिक्षा प्रदान करना और प्रवेश के लिए अत्यंत कठिन 'द्वार–परीक्षा' आयोजित करना, यह दर्शाता है कि

उस युग में 'गुणवत्ता' और 'समान अवसर' शिक्षा के मूल मंत्र थे जो आज भी प्रतियोगिता परीक्षाओं का मूल आधार बना हुआ है।

नालंदा का इतिहास हमें यह सिखाता है कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सैन्य विजयों में नहीं, बल्कि उसके बौद्धिक केंद्रों और वैचारिक स्वतंत्रता में होती है। यद्यपि समय के थपेड़ों और आक्रमणों ने इसके भौतिक स्वरूप को नष्ट कर दिया, किंतु 'नालंदा विश्वविद्यालय की भावना' आज भी भारतीय शिक्षा जगत के लिए एक प्रेरणापुंज और आदर्श बनी हुई है। यह प्राचीन बिहार की वह धरोहर है जिसने भारत को 'विश्व गुरु' के पद पर प्रतिष्ठित किया। नालन्दा विश्वविद्यालय भग्नावशेषों एवं इसकी विरासत का संरक्षण एवं परिवर्धन अतिआवश्यक है जिससे कि आगे आने वाली पीढ़ियां अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरित व आत्म – प्रकाशित हो सकें।

संदर्भ सूची –

1- Altekar, A.S. (1957), Education in Ancient India, Nand Kishore & Bros., Varanasi.

2- प्रसाद, राजेंद्र (1951), भारतीय शिक्षा, आत्माराम एंड संस , दिल्ली ।

3- Dalrymple, William (2024), The Golden Road: How Ancient India Transformed the World, Bloomsbury Publishing, London.

4- K. Abhay (2025), BBC Hindi, 02 Feb. 2025-

5- Mookerji, Radha Kumud (1974), Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist, Motilal Banarsidass, Delhi.

6- Nalanda.nic.in, Visit – April 03, 2026.

7- Tourism.bihar.gov.in , Visit – April 03, 2026.

8- अहमद, इम्तियाज (1990), बिहार : एक परिचय, नोवेल्टी एंड कंपनी, पटना।

9- Vidyabhushan, S.C (2002), A History of Indian Logic: Ancient, Mediaeval and Modern Schools, Motilal Banarsidass, Delhi.

- **राजेश्वर कुमार rajeshwarraj.1980@gmail.com Mob.9450384939**
- **अभिषेक आर्ष arshabhishek@gmail.com Mob.9450384939**